क्या यीशु जी उठे थे ?

विज्ञान तकनीकी और औषधि अनुसन्धान के सम्बन्ध में खोजबीन करनेवाले से पूरा विश्व लाभ उठाता है । इसी प्रकार महान आत्माएँ किसी देश और युग के नहीं होती हैं । उनके प्रभाव का क्षेत्र सम्पूर्ण विश्व है और आनेवाला प्रत्येक युग भी।

इसलिए इस्राएल देश में एक बढ़ई के घर में उत्पन्न होने वाले व्यक्ति का प्रभाव सारे विश्व में क्या है ? उनके सभी शिष्यों ने जान की बाजी लगाकर विश्व को इस पृथ्वी पर उनके आने, दु:ख उठाकर मर जाने और जी उठने का संदेश क्यों दिया ? यह सब हमें जानने की आवश्यकता है ।

1. दुनियां के अधिकांश लोग यीशु के इस पृथ्वी पर उत्पन्न होने के सम्बन्घ में प्रश्न नहीं उठाते है । सन 1984 में इलस्ट्रेटेड वीकली के सम्पादक प्रितिश नन्दी ने यीशु की एतिहासिकता के बारे में प्रश्न उठाया था यह उनकी मौलिक रचना नहीं थी । उन्होने इयन विलसन की पुस्तक ''जीज़स द ऐविडेन्स'' से सामग्री लेकर लोगों को गुमराह करने की कोशिश की थी ।

   आज हमारा अंग्रेजी कैलेण्डर ही (ईस्वीपूर्व/ईस्वी) इस बात का सबूत है कि यीशु एक ऐतिहसिक व्यक्ति थे । इसलिए ऐतिहासिकता की पुष्टि करना अपना समय नष्ट करना है । उनके अस्तित्व (जन्म) को नकारना एक बड़ी गलती है ।

2. विश्व की एक बड़ी जनसंख्या और उनकी धार्मिक पुस्तक यीशु की मृत्यु का इन्कार करती है । ऐसा वे इसलिए करते हैं, क्योंकि उनके अनुसार एक नबी का यह हाल हो ही नहीं सकता । क्रूस पर एक नबी का मरना उनके लिए शर्म और कमज़ोरी की बात है । इसलिए उनमें से कुछ लोग कहते है यीशु क्रूस पर मरे नहीं थे बेहोश हुए थे । होश में आने के बाद उतरकर चले गये । दुसरी ओर कुछ लोग कहते है, कि यीशु के समान एक दूसरे व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ाकर मारा गया था ।

3. इस संसार में ऐसे लोगो की बड़ी संख्या है, जो यीशु के जी उठने पर शंका करते हैं । उनमें से बहुत से क्रिश्च्यन समुदाय के भी हैं । पिछले दशकों में बिशप जेन्किन्स और प्रेसबिटिरियन पास्टर केसमन का नाम सुर्खियों में था । उन्होंने यीशु के शारीरिक रीति से जी उठने के बारे में प्रश्न उठाया था ।

   यीशु की मृत्यु और जी उठने पर प्रश्न उठते रहे हैं । इन विषयों पर प्रकाश डालना आवश्यक हो गया है ।

यीशु की मृत्यु और जी उठना

मार्टिन लूथर किंग ने अश्वेतों के अधिकार के लिए अपने प्राण दिए। इतिहास ऐसे अनेक उदाहरणों से भरा हुआ है, जहाँ दूसरों के लाभ के लिए लोगों ने अपने प्राण दिए या सारा जीवन अर्पण कर दिया ।

भविष्यद्वक्ताओं की घोषणा

यीशु की मृत्यु के विषय में परमेश्वर की आत्मा की प्रेरणा से संदेश देनेवालो ने पहले ही से भविष्यद्वाणी के रूप में कह दिया था; ''परन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को अधोलोक के वश से छुड़ा लेंगे, क्योंकि वही मुझे ग्रहण कर अपनाएंगे ।'' '' क्योंकि आप मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेंगे, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देंगे ।''1*

जो समाचार हमें दिया गया, उसका किस ने विश्वास किया ? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ ? क्योंकि वह उसके साम्हने अंकुर की नाईं और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते ।

वह तुच्छ जाने जाते ओर मनुष्यों का त्यागे हुए थे; वह दुःखी पुरूष थे, रोग से उनकी जान पहिचान थी; और लोग उनसे से मुख फेर लेते थे । वह तुच्छ जाने गये, और हम ने उनका मूल्य न जाना ।

निश्चय उन्होंने हमारे रोगों को सह लिया ओर हमारे ही दुःखों को उठा लिया; तौभी हम ने उन्हें परमेश्वर का मारा—कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा । परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किए गए, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचले गए; हमारी ही शान्ति के लिए उन पर ताड़ना पड़ी कि उनके ऊपर कोड़े पड़ने से हम लोग स्वथ्य हो जाएं ।'' 2*

यीशु ने अपनी मृत्यु और जी उठने के बारे में स्वयं कहा था।

''और मुझे गैरयहूदियों के हाथ सौंपेंगे, कि वे मुझे ठट्ठों में उड़ाएं, कोड़े मारें और क्रूस पर चढ़ा कर मार डालें, और मैं तीसरे दिन जिलाया जाऊँ।'' 3*

''और वे मुझे मार डालेंगे, और मैं तीसरे दिन जी उठूंगा । 4*

इतिहासकारों की साक्षी।

अ) रोमन इतिहासकार करनेलियुस टैसिटस (ए. डी. 52) ने यीशु नामक व्यक्ति के क्रूस की मृत्यु व्दारा दंडित किए जाने के विषय लिखा था ।

ब) यहूदी इतिहासकार जोसेफस (ए. डी. 37) ने एन्टीक्वीटीज़ XIIII 33 में यीशु की मृत्यु पर विश्वास करनेवालों के विषय लिखा था । एन्टीक्वीटीज़ XVIII 33 में उसने लिखा है ...''जब हमारे बीच के बहुत लोगों ने ज़िद्द की, पिलातुस ने उन्हें क्रूस की सज़ा सुना दी । जो यीशु से प्रेम रखते थे उन्होंने यीशु को छोड़ा नहीं । वह ईश्वरीय भविष्यद्वक्ताओं के अनुसार तीसरे दिन जी उठे''

स) यहूदी इतिहासकार थैलस ने भी यीशु की मृत्यु के बारे में लिखा ।

---

1 * भजन 49:15, भजन 16:10

2 * यशायाह 53:1.—5

3* मत्ती 20:19

4* मत्ती 17:22

द)	इतिहासकार पौलुस ने लिखा है कि यीशु, एक ही समय में बहुत से लोगों को दिखाई दिए, ''फिर पांच सौ से अधिक भाईयों को एक साथ दिखाई दिये, जिन में से बहुततेरे अब तक वर्तमान हैं पर कितने सो गए।''6* इतिहासकार लूका, बताता है कि कई लोगों को सबूतों के साथ दिखाई दिए''. ...उन्होंने दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देते रहे और परमेश्वर के राज्य की बातें करते रहें'' । 7*

यीशु के शिष्य जैसे मत्ती, मरकुस आदि ने भी यीशु के मृत्यु और जी उठने के सम्बन्ध में सिखाया और लिखा । यदि वे झूठ फैला रहे थे, तो किसी ने इस बात को चुनौती क्यों नहीं दी ? यदि यीशु का मरना और जी उठना सच नहीं था, तो इसके लिए वे सताए जाने और शहीद होने के लिए क्यों तैयार हुए ?

यीशु के बलिदान के रूप में मारे जाने और जी उठने के सत्य का इन्कार उस समय के यहूदी पंडितों ने भी करना चाहा था ।

''तब उन्हों ने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की, और सिपाहियों को बहुत चान्दी देकर कहा कि, ''यह कहना, कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए । इसलिए उन्होंने रुपए लेकर जैसा सिखाए गये थे, वैसा ही किया; और यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है।'' 8* यह सत्य, प्रजापति यज्ञ : यानि कि परमेश्वर स्वयं बलिदान है । शतपथ ब्राम्हण 1:13, 4:25 में भी है । यहूदी लोग यह नहीं जानते थे कि उनके धर्म में पशुबलि भविष्य में यीशु मसीह के बलिदान की ओर संकेत था ।

लगभग 800 वर्ष ईसा पूर्व में रचित शतपथ ब्राह्मण वैदिक काल के द्वितीय चरण का एक प्रमुख ग्रन्थ है और विभिन्न सूत्रों ने इसे वेद का प्रमाणित अंग मान्य किया है । यह ब्राह्मण (कुल छः ब्राह्मण हैं, यथा : आर्णेय, ऐतरेय, कौषीक, तैत्तिरीय, कौषीतकी एवं शतपथ) श्वेत यजुर्वेद से सम्बन्धित है । जयुर्वेद स्वयं भी यश का आख्याता है और अश्वमेघ बलि में अश्व के वास्तविक मारे जाने एवं तत्सम्बन्धी विवरणत्मक धर्मविधियों का विवेचन करता है ।

पूर्वकाल एवं वर्तमान –दोनों के ही अनेक व्याख्याता पशुबलि के इन वृत्तान्तों की सत्यता एवं वास्तविकतापूर्ण स्वीकारते हैं । शंकर और रामानुज – दोनों ही प्राचीनकाल में हिंसक यज्ञ (पशुबलि के प्रयोग को मान्य करते है । (देखिए, Sacred Books of the East xxxviii, 131 तथा xlviii, 598-599)। यजुर्वेद फिर आगे भी साक्षी देता है, कि बलि किए गए अश्व का प्राण बलिदान के तत्काल बाद स्वर्ग प्राप्त करता है (23:16) । विख्यात आधुनिक विद्वान महामहोपाध्याय पी. बी. कणे, जिन्होंने 'धर्मशास्त्र का इतिहास विषय पर कई खण्डों में पुस्तकें लिखी हैं, इनमें व्याख्या सहित हिन्दूमत में पशुबलि का विस्तृत विवरण सुलभ कराते हैं (पृष्ठ 420–23; 542–43; 565) । 9*

''पशु बलि अनेक आदिवासियों में प्रचिलित है । शिक्षित, शहरवासी लोग भी अपने धर्म में बकरे, मुर्गे आदि के बलि की बात करते है । बलिदान से, रक्त बहता है.'' बाईबिल में लिखा है कि ''बिना रक्त बहाए क्षमा नहीं''। 10 * किन्तु किसका रक्त ?

''यह असंभव हैं कि बैलों और बकरों का लहू पापों को दूर करे'' 11* यह असंभव क्यों था ? इसलिए कि, पशु मनुष्यों का स्थान नहीं ले सकते थे । एक मनुष्य, और वह भी पवित्र मनुष्य का रक्त ही मनुष्यों के अपराधों की क्षमा के लिए आवश्यक था । परमेश्वर को छोड़कर कोई निष्कलंक नहीं है । इसलिए परमेश्वर को यीशु मसीह के रूप में आकर मनुष्य के लिए मनुष्य के रूप में अपनी बलि चढ़ानी पड़ी। क्योंकि वह परमेश्वर थे और वह देह में आए थे, उनका जीवित हो जाना भी आवश्यक था ।

6* 1 कुरि 15:6
7* प्रेरित 1:3
8 * मत्ती 28:12,13,15
9* मत्ती आचार्य दया प्रकाश, 'वैदिक मोक्षयात्रा का लक्ष्य तारणहार प्रभु यीशु', पृष्ट 79
10* इब्रा. 9:22 ।
11* इब्रा 10:4 ।

यीशु का जी उठना मात्र कल्पना या एतिहासिक सत्य ?

जैसा मैंने बताया है, कि बहुत कम लोग हैं जो यीशु की एतिहासिकता पर प्रश्न उठाते हैं । अधिक लोग वे हैं, जो यीशु की मृत्यु पर सन्देह करते हैं और सबसे अधिक वे, जो यीशु के जी उठने पर ।

वर्तमान समय में यदि कोई व्यक्ति मरने के बाद जी जाए तो लोग या तो उसे भूत प्रेत समझकर डरेंगे, मार डालेंगे या पूजने लगेंगे ।

यहाँ यीशु के सम्बन्ध में प्रश्न यह है कि क्या यीशु के जी उठने की पुष्टि की जा सकती है ।

इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए ही यह पूछना पड़ेगा, कि यीशु का जी उठना एतिहासिक बात है या इतिहास से हटकर।

यीशु जी उठने के बाद 40 दिन ही पृथ्वी पर रहे । उन चालीस दिनों के सम्बन्ध में क्या किसी इतिहासकार ने लिखा है ?

कानूनी मामलों के ज्ञानकार डॉ. साइमन ग्रीनलीफ कहते हैं, ''जीवित हो उठने के बाद आखों से देखने वालों की बात का सारांश यह साबित करता है, कि उन लोगो की गवाही विश्वसनीय है ।''

अब सवाल यह उठता है, कि यदि इतिहासकारों ने देखा होता (हालांकि वे यह अवश्य कहते हैं, कि यीशु के माननेवाले उनके जी उठने पर विश्वास करते हैं) और पुस्तकों में लिखा होता, तो क्या पिछले 2000 वर्षों में सभी लोगों ने यीशु के जी उठने पर विश्वास किया होता ।

एतिहासिक सत्य की सच्चाई पर विश्वास करना इस बात पर आधारित नहीं है, कि उसके कितने पुख्ता प्रमाण हमारे पास हैं । यह हमारे रवैये पर निर्भर है। हमारे निर्णय पर निर्भर है कि हम विश्वास करें या नहीं ।

एक और बात यह है, कि उनके जी उठने पर विश्वास करने से क्या लाभ? और किसको ? यीशु के जी उठने पर विश्वास न करने पर क्या हानि ? और किसको ?

मात्र यीशु के जी उठने पर विश्वास करने से किसी को कुछ लाभ नहीं होता है। यीशु ने एक बार कहा, कि लोग मेरे पास आना (मुझे अपनाना, विश्वास करना) इसलिए नहीं चाहते क्योंकि उनके काम बुरे हैं ।

यीशु की शिक्षा का अधिक लोगों द्वारा स्वागत न किए जाने का कारण (जैसा आज भी है) यह है, कि वह पहले मनुष्य को आमूल परिवर्तन के लिए नेवता देते हैं । यह मनुष्य नहीं करना चाहता है । इसलिए, कि मनुष्य अपनी आँखों और शरीर की इच्छाओं को पूरा करने के लिए अपने विवेक के खिलाफ और किसी की भी हानि की चिन्ता न किए जीना चाहता है ।

यीशु के जन्म जीवन, मृत्यु और जी उठने के लाभ वही उठा सकता है जो अपने गंदे, बुरे, जीवन पर दुखी होकर उससे नफरत करके उन्हें छोड़ना चाहता है । इसे पश्चात्ताप या मन परिवर्तन भी कहते हैं । इस कदम को उठा कर यीशु के एतिहासिक कार्य को मानकर, अपने जीवन में उनकी शिक्षा को अपनाना, हमें वह लाभ दे सकता है जिसके लिए यीशु ने अपनी जान दी थी ।

हम संसार के एक ऐसे समय में जी रहे हैं, जहाँ अविश्वास, सन्देह और अनिश्चितता का वातावरण है । मनुष्य अपने आप में इतना कमज़ोर है कि वह बचपन से इसी रवैये को अपना लेता

है । लोग अपने वचन को पूरा नहीं करते हैं । लोग एक दूसरे की सम्पत्ति का सम्मान नहीं करते हैं, जिससे असुरक्षा, डर और शक का जन्म होता है । परिणामस्वरूप हर परिस्थिति में सन्देह से ही किसी कार्य को आरम्भ करने की आदत सी पड़ जाती है।

मुझे याद है, जब चाँद पर पहली बार मनुष्य ने पैर रखे, मेरे एक मित्र के पिताजी ने इस बात को मानने से इन्कार कर दिया । कुछ वर्षों बाद उनका देहांत हो गया । उनके उस सच्चाई पर विश्वास करने या न करने से एतिहासिक सच्चाई पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा । यीशु के जी उठने के अनेक पुख्ता प्रमाण हैं, लेकिन उस पर मनुष्य के विश्वास करने या न करने से उस घटित घटना पर कोई प्रभाव नहीं है ।

आप और मैं जानते हैं, कि चन्द्रमा पर मनुष्य गया है । संसार इस सच्चाई को जानता है । किन्तु क्या आपने अपनी आँखों से इस घटना को देखा है, जो चांद पर घटी ? आपने शायद टी. वी. या पत्रिका या सी. डी. के द्वारा यह देखा होगा ।

जहाँ तक पुरानी एतिहासिक घटनाओं का प्रश्न है, हमें इतिहासकारों और समकालीन लोगों की साक्षी पर ही निर्भर करना पड़ेगा और ये ब्यौरा हमें पुस्तकों में ही मिलता है ।

अब प्रश्न यह उठता है कि, यीशु दूसरे अन्य महान गुरूओं, ईश्वरों, और धर्म–संस्थापकों से किस प्रकार भिन्न थे ? क्या वे अद्वितीय हैं ? क्या उनकी तुलना दूसरों से की जानी चाहिए ?

यीशु का जन्म, चरित्र, मृत्यु और जी उठना सभी दूसरे महान लोगों से भिन्न थे । यीशु एक नए धर्म (क्रिश्च्यॅनिटी) के संस्थापक नहीं थे । यीशु कभी नहीं चाहते थे कि, एक नए धर्म की शुरूआत हो।

यीशु मानवजाति के सृष्टिकर्ता हैं । वह 2000 वर्ष पहले अपनी सृष्टि के मोक्ष (मुक्ति) के लिए मानव रूप धारण करके आए थे । अपने उद्देश्य को पूरा करके वह वापस स्वर्ग चले जाए ।

मनुष्य का जी उठना, भविष्य की महान घटना !

अपने जाने से पहले यीशु ने यह प्रतिज्ञा की थी, कि वह अपने लोगों को अपने साथ ले जाएंगे। भविष्य में एक दिन यीशु के जीवित शिष्य बदल जाएंगे । उनको नयी देह मिलेगी । यीशु के वे शिष्य जो मर चुके होंगे, जी उठेंगे । ये सभी आकाश में यीशु से मिलेंगे ।

इस संसार में सात वर्ष के क्लेश के बाद यीशु का एक हजार वर्ष का राज्य स्थापित होगा । उस काल के पश्चात वे सभी लोग जी उठेंगे, जिन्होंने यीशु व्दारा उपलब्ध क्षमा को हासिल नहीं किया था।

मसीह का जी उठना, इन सभी लोगों के जी उठने की गारण्टी है । इस तरह से यीशु का जी उठना एक तरफ लोगों को एक आशा देता है, दूसरी ओर जिन्होंने अपराधों को क्षमा नही हासिल की है, उनके लिए एक भयंकर चितौनी ।

एच. सुरेन्द्र सिंग

□□□